पवनपुत्र हनुमान

पवनपुत्र हनुमान

भारत की दो प्रचीन संस्कृतियाँ हैं जैन और वैष्णव संस्कृति, दोनों ही धर्म अधारित हैं। बहुत कुछ समानता होने पर भी भिन्नता अधिक है। जैन धर्म आत्मार्थी है जबकि वैष्णव धर्म ईश्वरवादी है। जीव जब मनुष्य जन्म में आता है, तो उसका पराक्रम,बल, बुद्धि, विद्या सब उसके पूर्व जन्म के कर्मों पर आधारित होता है, ऐसा जैन संस्कृति का मानना है। वैष्णव संस्कृति ब्रह्मा, विष्णु और महेष को ही कर्त्ता और दर्त्ता मानते हैं। पवन पुत्र हनुमान का दोनों जैन और वैष्णव संस्कृति में महत्व पूर्ण स्थान है, जैन संस्कृति में वह महाबली थे और अति सुन्दर सौरभ देह के स्वामी थे जबकि वैष्णव संस्कृति महान योद्धा को वानर के रुप में प्रदर्शित करती है, उनकी माता अंजना अति सुन्दर स्त्री थी और पिता आकाशगामी विद्या वाले सुन्दर स्वरूप वाले युवराज थे। उस समय वानर जाति को विशेष+ नर वानर कहा जाता था। इस जाति के सुग्रीव, बाली, नल और नील सब अतुल पराक्रमी योद्धा थे और इनकी ध्वजा का चिन्ह बान्दर और जाति वानर थी।

16.10.2020 स्वतन्त्र जैन जलन्धर

पवनंजय के साथ अंजनी का लग्न और उपेक्षा

वैताढ्य पर्वत पर आदित्यपुर नाम के नगर का राजा प्रह्लाद की महारानी केतुमती के पुत्ररत्न हुआ जिसका नाम पवनंजय जो बलवान और साहसी था। आकाशगामिनि विद्या से वह भ्रमण करता रहता था । उस समय भरतक्षेत्र में समुन्द्र के किनारे महेन्द्र नगर में महेन्द्र नरेश राज्य करता था । उसकी पत्नी हृदयसुन्दरी से पुत्री ने जन्म लिया जिसका नाम अंजनासुन्दरी रखा गया । यौवनावस्था में वर की तलाश में कईं आए जिसमें पवनंजय का चयन हुआ। निर्धारित समय में दोनों का लग्न हो गया ।

अंजना के श्वसुर ने सात खण्ड का भवन के साथ सब प्रकार की सुख-सुविधा प्रदान किये परन्तु पवनंजय अंजना से विमुख ही रहा। अंजना विमुख होकर उदासीन रहने लगी और इस तरह से 22 वर्ष बीत गये ।

वरुण नाम का राजा, रावण की अवज्ञा करता था और कहता था कि रावण बहुत घमण्डी हो गया है। रावण ने उसके साथ युद्ध करने के लिए राजा प्रह्लाद को साथ रखने के लिए निमन्त्रण दिया । पवनंजय ने पिता के स्थान पर आप जाने की आज्ञा ली। सब से मिला परन्तु अंजना की ओर दृष्टि भी नहीं डाली । अंजना उनको निर्दोष मानकर अपने ही अशुभ कर्मों

पर विचार करने लगी और तड़पने लगी । उधर पवनंजय अपने मित्रों सहित सेना की छावनी में पहुँचे। संध्या के समय सरोवर के किनारे एक चक्रवाकी की ओर युवराज का ध्यान गया देखा कि पक्षिणि प्यारे के वियोग में तड़प रही है। विचार किया कि पक्षिणि एक रात के वियोग में तड़प रही है तो अंजना कि क्या दशा होगी ? वह वर्षों से तड़प रही होगी। अंजना के शुभ कर्मों का उदय हुआ और पवनंजय चिन्तित हो गया और मित्रों से परामर्श किया। मित्र ने कहा," अब आप ने सही विचार किया, इसलिए तुम अभी जाओ और उस अशवस्त कर प्रातः लौट आओ।

पवनंजय अपनी आकाशगामी विद्या के बल अंजना के भवन पर आ कर द्वार से देखा कि अंजना पलंग पर पड़ी तड़प रही है। अचानक अंजना की दृष्टि द्वार पर पड़ी वह चौंकी और बोली- अरे तू कौन है ? यहाँ क्यों आया ? जा भाग यहाँ से? युवराज्ञी आपकी महापीड़ा का शमन करने के लिए युवराज पवनंजय पधारे हैं। मैं उनका मित्र आपको बधाई देने के लिए आया हूँ, पवनंजय मेरे पीछे खड़ा है ।

प्रिये- बस बस बहुत हो चुका, मेरा पाप सीमा लांघ चुका, मुझे क्षमा करो, कल्याणी मुझे क्षमा कर दे कहता हुआ

पवनंजय अंजना के निकट आया। अंजना आनन्ददायक संयोग से आवाक् रह गई, पलंग से नीचे उतरी प्रणाम किया। पति-पत्नी का मधुर मिलन देख दासियां पीछे हट अनयत्र चली गई।

प्रिये-मैं गुप्त रुप से आया हूं और गुप्त रुप से चला जाऊँगा। तुम आनन्द में रहना शीघ्र ही विजयश्री प्राप्त कर लौट आऊँगा।

नाथ आप विजयश्री प्राप्त कर लौटे। मैं ऋतु-स्नाता हूँ,कदाचित् गर्भ ठहर जाए तो अन्य मेरे चरित्र पर शंका करेगें,कलंक लगाएगें तब मै क्या उत्तर दूँगी ? अच्छा होगा आप मातेश्वरी से मिलकर जाए । पिता जी को सन्देह हो जाएगा, लो मैं तुझे अपनी नामंकन मुन्द्रिका देता हूँ, आप इसे दिखा देना । वैसे मैं शीघ्र ही लौट आऊँगां ।

मुन्द्रिका स्वीकार करते हुए बोली-विजयी भव, अपनी दासी पर कृपा भाव रखें और अश्रुपूरित नयनों से पति को विदा किया ।

अंजनासुन्दरी निर्वासित

गर्भवती होने पर सौन्दर्य की दमक बढ़ने लगी,अंग-प्रत्यंग विकसित एवं सुशोभित होने लगे । लक्षण प्रकट होने लगे कि सास केतुमति को सन्देह हो गया और भर्त्सना करती कहने लगी। पापिन तूने यह क्या किया ? कुलटा तूने दोनों

घरों को कलंकित कर दिया । मेरा पुत्र तुम से घृणा करता है, मैं नहीं जानती थी कि तुम व्यभचारिणी हो? पवनंजय के युद्ध में जाने के बाद तुमने यह पाप किया है । मैं तेरी कोई बात सुनने को तैयार नहीं । दो-चार लाते जमाती हुई और महाराज से आज्ञा प्राप्त करवा, उसके आगे रथ आकर खड़ा हो गया । जब विपति आती है तो कोई सहायक नहीं होता, मायके परिवार ने भी रखने से इन्कार कर दिया।

मन्त्रियों ने बोला- जब बेटियों पर कोई अपत्ति आती है तो पिता ही हितचिंतक होते हैं । पितृगृह के अन्यथा कोई और शुभचिन्तक नहीं हो सकता । इसलिए मेरा निवेदन है कि गुप्तरुप से पुत्री का पालन-पोषण करना चाहिए ।

महाराज । न्याय कहता है कि अरोपी की बात भी सुननी चाहिए ।

बस मन्त्री बस, मेरा आदेश है कि नगर सीमा से बाहर कर दिया जाय । नरेश उठ कर चल दिये है नाथ। आपके दूर होते ही सारा संसार मेरा शत्रु हो गया ।

पति के बिना पत्नी का जीवन विडम्बना पूर्ण होता है । मेरे प्राण इस दुःख में भी क्यों नहीं निकलते? अंजना को भयानक जंगल में छोड़ दिया गया और उसके साथ उसकी सेविका भी थी। जंगल के भयानक वातावरण में एक गुफा पर नजर पड़ी,

वहाँ एक ध्यानस्थ मुनिराज दिखाई दिये,दर्शन करने की लालसा से वहाँ पहुँच प्रणाम किया। मुनिराज ने ध्यान खोला-अंजना ने पूछा-इस गर्भ में कैसा जीव है और क्या भविष्य है ? जो दुर्दशा हो रही है । आप मुझ पर कृपा करे, मै कैसे इस की रक्षा कर सकूँ ।

हनुमान जी का पूर्वभव

महार्षि श्री अमितगति जी ने अंजना का दुःख देख कर कारण बताते हुए कहा-प्रियनन्दी नाम का व्यापारी था,जया नाम की पत्नी और दमयंत नाम का पुत्र था,रुपसम्पन्न संयमप्रिय था। एक बार वह क्रीड़ा के लिए उद्यान में गया वहाँ मुनिराज ध्यान में मग्न थे। दमयंत ने वन्दना कर बैठ गया और मुनिराज ने धर्मोपदेश दिया । दमयंत ने गुण ग्रहण कर कई प्रकार के नियम,व्रत लेकर दानादि देता हुआ दूसरे स्वर्ग में महर्द्धिक देव हुआ । देवभव पूर्ण कर मृगांकपुर के राजा वीरचन्द्र की पत्नी प्रियंगुलक्ष्मी के पुत्र हुआ जिसका नाम सिंहचन्द्र था । जैनधर्म पाकर यथाकाल मृत्यु पाकर देव हुआ। देवभव पूर्ण कर कनकोदरी का पुत्र सिंहवाहन हुआ श्री विमलनाथ भगवान के समय श्री लक्ष्मीधर मुनि के पास दीक्षा धारण कर निष्ठापूर्वक पालन कर लांतक देवलोक में देव हुआ । वहां से आयु पूर्ण कर तुम्हारे गर्भ में आया है। यह जीव गुणों

का भंडार, महापराक्रमी,विद्याधरों का अधिपति चरमशरीरी और स्वच्छ हृदयी होगा।

अंजनासुन्दरी का पूर्वभव

कनकराजा की दो कनकवती और लक्ष्मी नाम की रानिया थी। कनकवती मिथ्यात्वी एवं जैनधर्म द्वेषणि जबकि लक्ष्मी जिनधर्मानुरागिनी। कनकवती ने द्वेष से एक मुनि का रजोहरण हरण कर छुपा लिया। रजोहरण के अभाव से मुनि कहीं जा नहीं सकता था जिससे उनका अहार-पानी छुट गया। अंत में कनकवती ने द्वेष हटा कर क्षमायाचना की। मुनिवर के उपदेश से धर्मप्रिय होकर जिनधर्म का पालन करने लगी। यथाकाल पूर्ण कर सौधर्म स्वर्ग मे देवी हुई और वहां से च्यव कर अंजनासुन्दरी हुई। यह अशुभकर्म समाप्त होने वाला है . थोडी ही देर में अंजना का मामा आ कर तुझे ले जाएगा और पति का मिलाप भी हो जाएगा। धर्म का पालन कर विपत्ति नहीं आएगी, यह सारा क्लेश, कलंक आदि पूर्वभव का है। नमो अरिहंताणं करते मुनिराज आकाश में उड़ गये और जंगल में विकराल सिंह गर्जना होने लगी तब वह महामन्त्र नमस्कार का जाप करने लगी।

हनुमान जी का जन्म

मुनिराज जिस गुफा में ध्यानस्थ था उसका अधिपति मणिचूल नाम का गन्धर्व के दहाड़ से पशुओं मे भगदड़ एवं कोलाहल सुनकर मणिचुल ने अष्टापद का रुप बनाकर सिंह का पराभाव किया । उसके पश्चात अपने मूल रुप में आ कर प्रकट हुआ और आश्रय दिया। गर्भकाल पूर्ण होने पर अंजना ने पुत्र को जन्म दिया। तेजस्वी, सुलक्षणों से युक्त उसके चरण में वज्र अंकुश और चक्र के चिन्ह थे । अशुभकर्मों का उदय न होता,महल में होती तो कितनी चहल-पहल होती । हाँ मैं कितनी हतभागिनी हूँ।

मामा-भानजी का मिलन और बनवास का अंत

एक विद्याधर वहाँ से निकल रहा था कि महिला को देखकर पूछने लगा, सारा वृतान्त सुन कर कहने लगा मैं हनुपुर का राजा प्रतिसूर्य हूँ। मनोवेगा मेरी बहन है और तू मेरी भानजी हुई । मेरा सदभाग्य है कि मैं ऐसे वन में तुझे जीवित देख रहा हूँ, तेरी विपत्ति का अंत हुआ, अब तूँ मेरे साथ चल । मामा को देख अंजना रोने लगी, मामा ने सन्तावना देते हुए अपने विमान में बिठाया ।

बालक अंजना की गोदी में लेटा हुआ था कि बालक की दृष्टि एक चमकते झुमर पर पड़ी, पकड़ने के प्रयास में उछला

और विमान से नीचे पर्वत पर गिर गया। अंजना घबरा कर चिल्लाने लगी। राजा विमान को स्तंभित कर नीचे उतरा और बालक को हँसता-खेलता पाया। जिस पर्वत पर गिरा था उसके टुकड़े-टुकड़े हो गये । बालक को ला कर अंजना की गोदी में दिया और कहने लगा-पगली तू रो रही है जिस पर्वत पर गिरा पर्वत चूर-चूर हो गया, यह किलकारियां मार रहा है । यह महाबली पराक्रमी है । अंजना का हनुपुर में सत्कार हुआ और जन्मोत्सव मनाया नाम दिया हनुमान । अंजना उपर से तो हंसती रहती थी परन्तु कलंक से वह चिन्तित रहती थी । हनुमान सुखपूर्वक बढ़ने लगा ।

पवनंजय का विजयी होकर लौटना

वरुण रावण का अधिपत्य स्वीकार नहीं कर रहा था और खरदूषण को बन्दी बनाया हुआ था । पवन को समझाने पर खरदूषण को छोड़ दिया और रावण से सन्धि हो गई। रावण ने प्रसन्न हो कर पवन को वापिस भेजा । पवन का विजयी होकर लौटने पर भव्य स्वागत हुआ । परन्तु अंजना नजर नहीं आई, माता-पिता को प्रणाम कर तुरन्त अंजना के महल में गया जो विरान पड़ा था, दासियो से अंजना पर कलंक सुन कर पवनंजय दहल उठा, बिना कुछ खाये-पिये ही ससुराल पहुँचा जब वहाँ भी नहीं मिली तो शोकाकुल हो गया । तब

महाराज प्रह्लाद और राजा नरेश अंजना की खोज में निकले। चारों तरफ सैनिक घूम रहे थे और उधर पवनंजय की माता अपनी मूर्खता पर पश्चाताप कर रही है भावी अनिष्ट की संभावना दिख रही है। अंजना का पिता भी पश्चाताप कर रहा है कि मैंने आवेश में आकर मन्त्री की परामर्श ठुकरा दिया। उधर पवनंजय ने मित्र से कहा-तुम जाओ, मैं अब जीवित नहीं रहना चाहता। सेनिक खोज करते हनुपुर पहुँचे जब अंजना मिल गई तो कहने लगे पवनंजय विरक्ती से चिता में कूदने वाला है। समाचार सुनते ही प्रतिसूर्य अंजना को विमान में लेकर वन की ओर गया, पवनंजय कूदने से पहले अंजना की निर्दोषता कह रहा था कि विमान वहां पहुँच गया। सुखद मिलन हुआ और सब हनुपुर पहुँच गये। उधर अंजना के माता-पिता को सुखद समाचार मिलने पर वह भी हनुपुर पहुँच गये और पवनंजय का परिवार भी हनुपुर आ गया। हर्ष की कोई सीमा न रही। हनुपुर में अचानक उत्सव का वातावरण बन गया जो कई दिनों तक चलता रहा। उत्सव पूर्ण होने पर सब अपने-अपने स्थान चले गये, किन्तु अत्याग्रह के कारण पवनंजय,पत्नी और पुत्र सहित वहीं रहे। हनुमान जी अपनी शक्ति और बुद्धि से ऐसे कार्य करने लगे, जिससे सब चकित हो

जाते थे। आरम्भ में वह राम भक्त नहीं थे। ऋषि-मुनियों का आदर करते थे और उनके विचार जानने का प्रयास करते थे।

श्री राम से हनुमान का मिलन और सीता की खोज का प्रयास

जब सीता को रावण अपहरण कर ले गया, तो श्री राम और लक्ष्मण ने खोज करने पर भी कोई सफलता न मिली। उन की कपिराज सुग्रीव से भेंट हुई, जो स्वयं मुसीबत का मारा फिर रहा था। सुग्रीव किष्कन्धा नगरी का नरेश था और उसकी रानी तारा जो अत्यन्त सुन्दरी थी। उसके रूप पर साहसगति विद्याधर मुग्ध था । साहसगति ने तारा को प्राप्त करने के लिए हिमाचल की गुफा में रह कर तप किया और प्रतारिणी विद्या सिद्ध कर ली, जिससे वह इच्छित रूप धारण कर सकता था। एक दिन सुग्रीव वन में भ्रमण करने निकला कि साहसगति ने सुग्रीव का रूप धारण कर महल में प्रवेश कर गया, कुछ ही देर बाद जब सुग्रीव महल में पहुँचा तो पहरेदारों ने रोक लिया, आप कौन ? महाराज सुग्रीव तो कुछ समय पहले प्रवेश कर गये हैं। जब तक हम आश्वस्त नहीं होते आपको प्रवेश की अनुमति नहीं दे सकते। महल में रानी तारा और युवराज को भी सूचित कर दिया गया। रानी और युवराज(बाली कुमार) एवं अन्य परिजनों को दोनों में कोई अन्तर नहीं नजर आया। देखते देखते दोनों के पक्षधर हो गये। सेना में भी भेद पड़ गया।

कुछ एक तरफ और कुछ दूसरी तरफ कि युद्ध छिड़ गया। दोनों महाबली, वीर योद्धा, भारी लड़ाई हुई कि वास्तविक सुग्रीव को क्रोध आ गया। दोनों के अस्त्र समाप्त होने पर मल्ल युद्ध आरम्भ हुआ। वास्तविक सुग्रीव ने हनुमान को साथ आने का निमन्त्रण दिया। परन्तु सच्चाई किस के पक्ष की है निर्णय नहीं हो सका तो हनुमान जी दर्शक ही रहे। नकली सुग्रीव ने धोखे से वास्तविक सुग्रीव को महल से बाहर कर दिया। वास्तविक सुग्रीव का ध्यान रावण से सहायता की ओर गया, परन्तु विचार किया कि वह स्वयं लम्पट है, यदि उसने सहायता भी कि तो वह भी कहीं तारा पर मुग्ध न हो जाए, विचार त्याग दिया। फिर ध्यान खर-दूषण पर गया, उसे लक्षमण ने मार दिया था। फिर वह राम-लक्ष्मण के पास आया और सारी व्यथा सुनाई परन्तु वह स्वयं संकट में हैं फिर भी श्री राम-लक्ष्मण सुग्रीव की सहायता के लिए तत्पर हो गये।

फिर सुग्रीव राम-लक्ष्ण के साथ किष्किन्धा आए और नकली सुग्रीव को ललकारा वह युद्ध के लिए आया परन्तु स्वयं राम निर्णय नहीं कर सके कि असली कौन और नकली कौन ? कुछ देर बाद श्री राम ने वज्राव्रत धनुष से टंकार किया, जिससे साहसगति कि रूपान्तक कारी विद्या निकल कर पलायन कर गगई और सारा भेद खुल गया। श्री राम ने फटकारते हुए कहा-

" दुष्ट पापी ! पर स्त्री लम्पट ! अब अपने पाप का फल भोग।" इतना कहकर अपने बाण से उसका काम समाप्त कर दिया । सुग्रीव का संकट समाप्त हो गया । उसने अपनी तेरह कन्याएं श्री राम को देने का प्रस्ताव दिया। श्री राम मुझे इनकी आवश्यकता नहीं, आप मुझे सीता की खोज नें अपनी सेवा प्रदान करें । जो सुग्रीव ने सहर्ष स्वीकार किया।

समय व्यतीत होता गया सुग्रीव अपने भोग विलास मे व्यस्त भूल गया। तब लक्ष्मण अपने गांडीव के साथ किष्किन्धा आए और सुग्रीव ने उनका स्वागत किया। लक्ष्मण- कपिराज आप अपना वचन भूल गये। सुग्रीव क्षमा करें महाराज मैं अभी इस काम में लग जाता हूँ।

सीता की खोज

सुग्रीव लक्ष्मण जी के साथ श्री राम के पास आए। श्री राम को प्रणाम कर अपने सैनिकों को चारों ओर खोज के लिए भेजा और आप भी आकाश मार्ग से कम्बूद्वीप पहुँचा। सुग्रीव को अपनी तरफ आता देख रत्नजटी चिन्तित हो गया।, उसने सोचा कि रावण मुझ पर क्रुद्ध होकर मेरी सारी विद्याओं का हरण कर लिया है और मारने के लिए सुग्रीव को भेजा है ।

सुग्रीव रत्नजटी के पास पहुँचा और कहने लगा, तुमने मुझे पहिचाना नहीं, यह क्या हालत बना रखी है।

" महानुभाव! रावण ने मेरी दुर्दशा कर दी, रावण सीता का हरण कर ले जा रहा था, मैं ने सीता का विलाप सुना और रावण का सामना किया, उस दुष्ट ने मेरी सारी विद्याएं निरस्त कर दी। बस उसी समय से मैं भटक रहा हूँ।"

" रत्नजटी ! अच्छा हुआ तुम मिल गये, मैं भी सीता जी की खोज करने निकला था।"

सुग्रीव रत्नजटी को साथ लेकर श्री राम जी के पास पहुँचा और रत्नजटी ने सारा वृत्तान्त राम-लक्ष्मण को सुनाया कि सीता रावण के पास लंका में है। राम जी ने रत्नजटी को सीने से लगाया और कुछ प्रसन्न हुए। श्री राम सुग्रीव से पूछने लगे लंका यहां से कितनी दूर है ?

" स्वामिन् ! लंका दूर हो या नजदीक, मूल प्रश्न तो है उस प्रचण्ड राक्षस से सीता हम ने कैसे प्राप्त करनी है। उस विश्वविजेता के आगे हम तुच्छ हैं। सर्वप्रथम हमें अपनी शक्ति का अनुमान लगाना चाहिए।"

" नहीं, नहीं! तुम्हें यह विचार करने की आवश्यकता नहीं। इस बात के लिए तुम निश्चिन्त रहो।" रावण शक्तिशाली होता तो चोर की भाँति क्यों अपहरण करता। उस दुष्टात्मा का

पतनकाल निकट आ गया है । आप केवल दर्शक रहें, लक्ष्मण जी ने समस्त राजाओं को कहा-

" वीरवर ! आपका कथन सत्य है। आप अजेय योद्धा हैं। परन्तु रावण भी शक्तिशाली है, हम आपके सेवक हैं, हम आपके पक्षधर है परन्तु फिर भी परिणाम पर विचार करना आवश्यक है।"

वद्धजनों ने कहा- यदि रावण ने अनीति अपनाई है तो हमें नीति पूर्वक ही चलना चाहिए। इसलिए सर्वप्रथम एक दूत को भेजा जाए, जो आपका सन्देश लेकर रावण को समझा सके। किन्तु किसी पराक्रमी एवं समर्थ को ही यह काम सौंपना चाहिए।

राम जी को वृद्धों की बात स्वीकार्य हुई, सुग्रीव ने श्री भूति को भेजकर हनुमान जी को बुलाया। सूचना मिलते ही तत्काल हनुमान जी पहुँचे, श्री राम जी को प्रणाम किया। सुग्रीव ने हनुमान जी का श्री राम जी से परिचय करवाया और कहा- हनुमान जी आकाशगामी और रूपपर्वतनी विद्याओं में निपुण महबली वीर हैं। इनको यह काम सौंपा जाए, इनके अतिरिक्त अन्य कोई समर्थ नहीं, जबकि उस समय गव,गवाक्ष, गवय, शरभ, गंधमादन,नील, द्विविद, मैंद, जाम्बवन्त, अंगद. नल. नील तथा अन्य नेक महानुभाव उपस्थित थे ।

" वीर हनुमान! तुम योद्धा हो, अजेय हो, पराक्रमी हो, तुम्हारी शक्ति से मै परिचित्त हूँ, तुम सब कुछ कर सकते हो।" इस तरह कहना-

" हे देवी! श्री राम तुम्हारे वियोग से अत्यन्त पीड़ित हैं और तुम्हारा ध्यान करते रहते हैं ।" विश्वास और धैर्य रखो हम शीघ्र ही तुम्हें लेने आ रहें हैं। श्री राम ने अपनी मुँद्रिका उतारी और हनुमान जी को दी यह निशानी सीता जी को दिखा देना।

" प्रभो! मैं कृतार्थ हुआ । किन्तु जब तक मैं लौट के नहीं आता आप इसी जगह पर रहें मैं यहां ही आऊँगा।"

हनुमान जी शीघ्र विमान में बैठ गये और लंका की ओर प्रस्थान किया।

हनुमान जी का मातामह (नाना) से युद्ध

लंका की ओर जाते हुए रास्ते में महेन्द्रपुर नगर आ गया। इस नगर पर दृष्टि पड़ते ही हनुमान को स्मरण आया यह तो मेरे नाना का नगर है, मेरे नाना और मामा ने मेरी माता को संकट के समय आश्रय देने से इन्कार ही नहीं अपितु कलंकनी कह दिया था। उन्होंने अपने मन्त्रियों के परामर्श को भी ठुकरा दिया था। हनुमान जी का क्रोध जागृत हुआ और

आवेश में आ कर रणवाद्य बजा दिया। युद्ध की स्थिति उत्पन्न हो गई। हृदय एवं पर्वतों को कम्पायमान करने वाल युद्धघोष सुनकर महेन्द्र नरेश और उनके पुत्र तत्काल सेना ले कर आ गये। भयंकर युद्ध हुआ जिससे महेन्द्र नरेश की सेना अस्त-व्यस्त होने लगी। हनुमान का ज्येष्ठ मामा प्रसन्नकीर्ति भी महा पराक्रमी और महाबली था उसका सामना करने में बहुत समय लग गया। हनुमान जी को विचार आया कि मैं तो स्वामी के कार्य लंका जाते हुए दूसरे झगड़ों में क्यों उलझ गया हूँ, फिर भी यह मेरे मामा हैं परन्तु फिर भी विजयी होकर ही आगे बढ़ना है, जिससे उन्होंने अपनी विशेष शक्ति से प्रहार किया और प्रसन्नकीर्ति को चकित करते उसका रथ तोड़ दिया और उन सब को पकड़ लिया, युद्ध समाप्त हुआ। अन्त में नरेश महेन्द्र और प्रसन्नकीर्ति को मुक्त करते हुए प्रणाम किया और अपना परिचय दिया और क्षमायाचना की। प्रसन्न होकर महेन्द्र नरेश ने उसको महल में पधारने का अनुरोध किया।

नहीं पूज्य, मैं अपने स्वामी श्री राम की सीता की खोज में लंका जा रहा हूँ, आपसे निवेदन है कि आप अपनी सेना लेकर श्री राम लक्ष्मण की सेवा में उपस्थित हो जाएं।

हनुमान जी आगे वढ़े और महेन्द्र नरेश सेना लेकर किष्किन्धा श्री राम की सेवा में आगे बढ़े।

दावानल का शमन

आगे बढ़ते हुए हनुमान जी ने दधिमुख द्वीप को देखा और वहाँ पर दो मुनिराज ध्यानमग्न थे और उनके पास तीन कुमारियाँ भी साधनारत थी, उस द्वीप पर उठ रही दावानल की भयंकर ज्वालाएं को देख कर हनुमान जी ने विचार किया यह इन प्रणियों का संहार कर देंगी, इनका बुझाना आवश्यक है। अपनी विद्या का प्रयोग करते तत्काल अग्नि शमन हो गई। हनुमान जी ने मुनियों को वन्दना की, कि तीन कुमारियों की साधना पूर्ण होते ही मुनियों को वन्दना की और हनुमान जी से पूछा-

" हे परमार्हत्! आपने हमें इन भयंकर विनाशकारी दावानल से बचाया, जिससे हमारी साधना सिद्ध (सफल) हो गई। हम आप के आभारी हैं।"

" हनुमान जी ने पूछा तुम्हारा परिचय क्या है।"

" हम दधिमुख के अधिपति गन्धर्वराज की पुत्रियाँ है। अंगारक नाम का एक विद्यधर था, जिसकी माँग हमारे पिता ने स्वीकार नहीं की थी और उसने कहा था कि साहसगति को मारने वाला ही इनका पति होगा। हमारे पिता उनकी खोज में

हैं। हम तीनों बहिने अपने भावी पति की खोज में विद्या साधन में लगी हैं ।"

" राजनन्दिनी! साहसगति को मारने वाले श्री राम हैं। मैं उन्हीं के कार्य के लिए लंका जा रहा हूँ ।" हनुमान जी ने सीता हरण वृत्तान्त सुनाया। तीनों पुत्रियाँ अपने पिता गन्धर्वराज के पास पहुंची उन्हें अवगत करवाया और गन्धर्वराज अपनी सेना लेकर सहायतार्थ राम-लक्ष्मण की सेवा में उपस्थित हुए।

आसुरी विद्याओं का विनाश और लंका सुन्दरी से लग्न

लंका के समीप आते ही लंका की रक्षा हेतु शालिका नाम की विद्या जो अत्यन्त काली, करूपी भयंकर रूप वाली, हनुमान जी को दिखाई दी। उसने ललकार कर कहा- हे मानव तू कहा आया है, मैं तेरा भक्षण करूँगी, उसने अपना मुँह खोला, हनुमान जी उसमें प्रवेश कर गये और पेट फाड़ कर बाहर आ गये। फिर एक वज्रमुख नामका राक्षस लंका की रक्षा कर रहा था। वह क्रोधवेश में युद्ध करने आया, हनुमान जी ने उसका भी अन्त कर दिया। वज्रमुख के मरते ही उसकी पुत्री जिसका नाम लंकासुन्दरी था जो अनेक विद्याओं की धनी थी, हनुमान जी से युद्ध करने आई। बार-बार प्रहार करने पर भी

हनुमान जी पर कोई असर न हुआ और अन्त में अस्त्र विहीन हो गई और विचार करने लगी कि यह मानव कौन हो सकता है, जो इतना वीर है। उसमें काम प्रवेश कर गया और हनुमान पर मोहित हो गई।

" हे धीर वार महानुभाव! मैंने अपने पिता के वध के कारण आपसे युद्ध किया, आपने मेरी समस्त विद्याओं को भंग कर दिया, आप कोई अद्भभुत पुरुष है, मुझे एक महात्मा ने कहा था कि तेरे पिता को मारने वाला ही तुम्हारा पति होगा। आप मुजे स्वीकार कर लें, हनुमान जी अपना कार्य बताया, लंकासुन्दरी ने कहा- रावण अजेय है, इस नगरी में एक ही न्यायप्रिय है विभीषण, आप उस से सम्पर्क करें। तब हनुमान जी ने उसके साथ गन्धर्व विवाह कर लिया और रात-भर क्रीड़ा करते रहे।"

नोट- वैष्णव संस्कृति हनुमान जी को ब्रह्मचारी मानती है।

हनुमान जी का विभिषण को सन्देश

लंकासुन्दरी से विदा होते ही लंका में प्रवेश करते ही विभिषण के समक्ष उपस्थित हुए। विभिषण ने हनुमान का सत्कार किया और आने का कारण पूछा-

" आप दशानन जी के बन्धु है,न्यायपरायण मन्त्री भी हैं, रावण श्री राम की पत्नी का अपहरण कर लाया है, मैं श्री राम का सन्देश ले कर आया हूँ कि आप सीता जी को मुक्त करवा दें। बलवान होते हुए यह कार्य रावण का अधम है अन्यथा दुःखद परिणाम होंगे।"

" वीर हनुमान ! आपका कथन सत्य है, मैं पहले भी निवेदन कर चुका हूँ , मेरी बात नहीं मानी, मैं पुनः प्रयास करूँगा अश्वासन देता हूँ।"

सीता को सन्देश

विभिषण की मन्त्रणा के पश्चात हनुमान सीधे देवरमण उद्यान में पहुँचे, वहाँ कठिन पहरा देखकर हनुमान जी ने अपनी रूपपर्वतनी विद्या का उपयोग करते वानर का रूप धारण किया, वहाँ पहले ही वानर हठखेलियाँ करते उछल-कूद कर रहे थे कि उन में जा मिले और अशोक वृक्ष पर जा बैठे, नीचे सीता उदास, आँसू बहाती हुई दिखाई दी। सीता अत्यन्त दुर्बल,म्लान हुई आशक्त हो गई थी। सीता को देखते ही हनुमान जी ने विचार किया, यह महान सती है, इसके दर्शन कर के मैं पवित्र हो गया हूँ। दुष्ट रावण के दुर्दिन आ गये हैं। कि उन्हों ने श्री राम की दी हुई मुन्द्रिका नीचे सीता की झोली में

फैंक दी, सीता देखकर अत्यन्त प्रफुल्लित हुई, इधर-उधर देखने लगी अचंभित होकर श्री राम का सन्देश कैसे आया है, आशा है वह सकुशल हैं, कोई उनका सन्देश लेकर आया होगा, उसके मन में अपार खुशी की लहर दौड़ गई, उसकी पहरेदार त्रिजटा ने पहलीवार सीता को प्रसन्न मुद्रा में देखा और विचार करने लगी कि सीता ने आवश्य ही रावण को स्वीकार कर लिया होगा। तुरन्त उसने रावण को सन्देश दिया।

रावण ने मन्दोदरी को भेजा- वह भी चिकनी- चुकनी बातें करनी लगी और रावण के गुणगान करने लगी, उसके बल और शौर्य बताने लगी।

सीता मन्दोदरी की वातों को सहन नहीं कर सकी क्रोधित होकर कहने लगी-

" ओ कूटनी! तू क्या समझती है मुझे, मैं तेरा मुँह भी नहीं देखना चाहती, याद रख तेरे पति का वही हाल होने वाला है जो खरदूषण का हुआ था और तेरा भी चन्द्रनखा (शूर्पनखा) जैसा, मेरे पति अपने अनुज बन्धु के साथ आने वाले हैं, तुम्हारी यह सोने की लंका राख होने वाली है। सब दूर हो जाओ यहां से।"

निराश होकर सब चली गई, यह सारा दृष्य हनुमान जी देख रहे थे कि वह वानर रूप में सीता के सामने उपस्थित

हुए, प्रणाम किया और कहने लगे- माता, श्री राम सकुशल हैं, आप के लिए चिन्तित है और शीघ्र ही आपसे मिलने वाले हैं। मैं उनके दूत के रूप में यहाँ आया हूँ, यदि आप चाहे तो मैं इसी तरह आप को उठाकर श्री राम के समक्ष ले जा सकता हूँ।

सीता, " हे वीर दूत! मैं पतिव्रता किसी अन्य पुरुष से सम्पर्क नहीं कर सकती, आप जिस रूप मे मेरे सामने उपस्थित हुए हो मैं समझ गई हूँ। मेरे श्री राम ही मुझ को विजयी होकर ले कर जाएंगें। जाकर मेरा सन्देश दे देना, मैं आपकी प्रतीक्षा में जीवित हूँ।" सीता जी ने अपनी चुड़मणि हनुमान जी को दी। हनुमान जी ने सीता को प्रणाम किया और चल दिये।

हनुमान जी का उद्यान में उपद्रव और रावण से मिलन

उस देवरमण उद्यान में खूब उपद्रव मचाया, उछलते-कूदते फल-फूल सब तोड़ डाले, वृक्ष उखाड़ दिए, इधर-उधर फैंकने लगे, चारों और राक्षसों का पहरा, सब पहरेदार ढूँढने लगे पर कोई नजर नहीं आ रहा केवल वानर ही उछल-कूद कर रहे थे, उन में से एक वानर (हनुमान) पहरेदारों को खूब तड़पा रहा था, पहरेदार अपने मुद्गर से वार करते कोई उस पर प्रहार ही नहीं होता, पहरेदार भी धराशायी होने लगे। कुछ राक्षस अपनी जान बचाकर रावण के पास पहुँचे, महाराज उद्यान में महा विनाश हो गया है, यह सब काम किसी अद्भुत वानर का

है, किसी के काबू में नहीं आ रह। रावण ने अपने पुत्र अक्षय कुमार को उस वानर (हनुमान) को मारने के लिए भेजा। अक्षय कुमार सेना लेकर आया, सब अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित होकर प्रहार करने लगे कि अक्षय कुमार को गत-प्राण कर दिया और सेना दौड़ गई। भाई के मरने के दुःखद समाचार से इन्द्रजीत युद्ध करने आया, उसके भी सब अस्त्र निष्फल हो गये और अन्त में अपने नागपाश फैंका, हनुमान चाहते तो उसको भी निष्फल कर सकते थे परन्तु हनुमान जी ने तो रावण से मिलना था वह स्वयं नागपाश में बंध गये, इन्द्रजीत बहुत खुश, अभी तुम्हें दशानन के सामने पेश करता हूं। रावण के समक्ष लाये गये बन्दी हनुमान को सब राक्षस, मन्त्रीगण देखने लगे।

रावण-हनुमान आमने सामने

रावण" अरे ओ मूर्ख! तू हमारा सेवक होते हुए उन बनवासियों के साथ कैसे मिल गया। तेरी बुद्धि कहाँ चली गई, तूम मेरे आश्रित हो।" हनुमान को जंजीरों में झकड़े हुए देखकर रावण कड़क के बोला। तुम ने कौन सा वहाँ लाभ देखा, वे मलिन कपड़े वाले, निर्वासित असहाय और वन-वन में भटकने वालों का सहायक बन के तुझे क्या मिले गा? मेरा सेवक होते उनका दूत कैसे बन गया।

हनुमान जी क्रोध में

" दशानन! तुम ने मुझे अपना सेवक कैसे समझ लिया ? यह तुम्हारी भूल है। तुम्हारा घमण्डी खर, जब वरुण के कारागर में थे तो मेरे पुज्य पिता जी ने उन्हें मुक्त करवाया था। उसके बाद तुम्हारी दूसरी माँग पर मैं खुद तुम्हारी मदद के लिए आया था और वरुण के पुत्रों के संकट से तुम्हारी सहायता की थी।" हम तुम्हारे सेवक नहीं थे। अब तुम पाप, अन्याय और अनार्य कार्य करने लगे, ऐसे अधर्मी, दुराचारी का मैं साथ कैसे दे सकता हूँ। राम-लक्ष्मण के पक्ष में सत्य, न्याय और नीति है। इसलिए मैं उनका साथी ही नहीं सेवक भी हूँ। वे महान और मर्यादाशील हैं, तुम्हारे अपराध का तुम्हें दण्ड देने में सक्षम हैं। यदि तुम अपना भला चाहते हो तो सकुशल सीता को लौटा दो अन्यथा परिणाम घातक होगें।

फिर भी तू दूत होने के कारण अवध्य है। किन्तु तेरी उद्दण्डता दूत की सीमा से बाहर है।" तेरा मुँह काला कर गधे पर बिठा कर नगर में घूमाता हूँ।

हनुमान जी का क्रोध भड़क उठा, उन्हों ने अपनी विद्या से नागपाश तोड़ डाला और विकराल रूप धारण कर अपने पाद प्रहार से रावण का मुक्ट गिरा गिया, उस विकराल रूप

से सब कंपित हो गये और हनुमान जी उछल-कूद करते, अपने पाद प्रहार से लंका का विनाश करते निकल गये। रावण चिल्लाता रहा-पकड़ो-पकड़ो, जाने न दो।

(वैष्णव संस्कृति में कहते है कि हनुमान जी की पूँछ को आग लगा दी, उनके विकराल रूप के आगे कोई टिक नहीं सकता था आग लगाना तो असंभव था) हनुमान जी अपनी आकाशगामी विद्या से किष्किन्धा पहुँचे, श्री राम-लक्ष्मण को प्रणाम कर सीता माता की दी हुई चूड़ामणि देकर सारा वृत्तान्त सुनाया। श्री राम जी सीता की चूड़ामणि देखकर प्रसन्न हो रहे हैं और हनुमान के कार्य की प्रशंसा कर रहें हैं। सब के साथ विचार-विमर्श कर युद्ध का निर्णय लिया गया।

युद्धारम्भ-नल-नील का पराक्रम

हंस द्वीप में आठ दिन रहकर श्री राम समस्त सेना को लेकर लंका की ओर प्रस्थान किया। लंका के निकट बीस योजन लम्बे-चौड़े मैदान में सेना का डेरा डाल दिया। रावण की सेना भी तैयार होकर आ गई। भीषण युद्ध होने लगा। मनुष्य ही क्या, हाथी, घोड़ों के अंग-प्रत्यंग भी कट-कट कर गिरने लगे। नल और नील ने हस्त का मस्तक काट कर गिरा दिया।

रावण ने अपने नागपाश से लक्ष्मण पर आक्रमण कर लक्ष्मण को अचेत कर दिया. श्री राम ने रावण पर बाण वर्षा

कर दी, रावण मैदान से निकल गया, श्री राम उसके पीछे जाने लगे कि सुग्रीव ने श्री राम को रोक लिया, पहले हम लक्ष्मण जी का उपचार कर ले। श्री राम लक्ष्मण को अपनी गोदी में लेकर चिन्तित हो रहे हैं। विभिषण महाभाव, धीरज रखो, शक्ति बाधक व्यक्ति रात्रिपर्यन्त ही जीवित रह सकता है। अभी सारी रात्रि शेष है, इसी बीच यन्त्र-मन्त्रादि से उपचार हो सकता है सभी विचार छोड़कर लक्ष्मण जी को सावधान करना है।

उधर रावण प्रसन्न हो रहा है लक्ष्मण की मृत्यु से राम स्वयं मर जाये गा।

भामण्डल (सीता जी का भाई) के पास एक विद्याधर आया और लक्ष्मण जी को जीवित करने का उपाय है विशल्या के स्नान के जल से इन का उपचार हो सकता है. विशल्या भरत जी के मामा की लड़की है। उसी समय भामण्डल,हनुमान जी और अंगद को आज्ञा दी कि वह तत्काल विमान में बैठकर अयोध्या श्री भरत जी के पास पहुंचे, भरत जी निद्राधीन थे उनको साथ लेकर कौतुकमंगल नगर पहुँचे, भरत नरेश ने अपने मामा से विशल्या का याचना की, द्रोणमेघ ने विशल्या को साथ जाने की अनुमति दी।सब विमान में पहले अयोध्या पहुंचे भरत जी को छोड़ा और लंका के लिए प्रस्थान कर दिया।

श्री राम जी हताश हो रहे है कि दूर से विमान की चमक दिखाई दी, श्री राम समझने लगे कि सूर्य उदय हो रहा है कि विमान नीचे उतर आया, ज्यों ही विमान से विशल्या बाहर आ कर लक्ष्मण जी के पास आई शक्ति शरीर से निकल कर भागने लगी कि हनुमान जी ने उस शक्ति को पकड़ लिया शक्ति बोली- मैं तो देवरूपी हूँ और प्रज्ञप्ति विद्या की बहन हूँ, मेरा कोई दोष नहीं, धरणेन्द्र ने मुझे रावण को दे दिया था। मैं विशल्या के तप-तेज को सहन नहीं कर सकी इस लिए मैं जा रही हूँ, मुझे क्षमा कर दीजिए। हनुमान जी ने छोड़ दिया।

(वैष्णव संस्कृति में हनुमान जी संजीवनी बूटी लेने हिमालय पर जाते हैं और वहाँ से पहाड़ ही उठा लाते हैं.)

फिर भीषण युद्ध होने पर लक्ष्मण जी रावण के सामने आते है और उसका वध कर देते हैं। क्यों कि वासुदेव ही प्रति-वासुदेव को मार सकता है। *(वैष्णव संस्कृति अनुसार रावण का वध श्री राम ने किया)*

श्री राम सीता जी को लेकर पुष्पक विमान में लक्ष्मण और हनुमान जी अयोध्या पधारे।

हनुमान जी जब सीता माता को प्रणाम करने गये तो सीता जी ने अपने गले से बहुमुल्य हार हनुमान जी को भेंट किया, हनुमान जी उस हार के मोतियों को तोड़ कर देखने लगे

कि इसमें कहीं राम हैं। उन्होंने अपनी छाती फाड़ कर दिखाया कि राम मेरे दिल में है।

हनुमान जी को मोक्ष

हनुमान जी मेरू पर्वत पर क्रीड़ा कर रहे थे कि देखा संसार में उदय और अस्त चलता रहता है, जो आज राव है , वे रंक भी हो जाता है। वे भव्य आत्माएं धन्य है जो संसार से उदासीन होकर तप से संसार का छेदन कर शाश्वत सुख प्राप्त करते हैं, मुझे भी अब आश्वस्त होकर इस चक्कर को काटना है। इस प्रकार चिन्तन करते हुए हनुमान जी आयुपूर्ण कर मोक्ष पधारे।

जय हनुमान